मनं वृत्त जान्यौ व्रितं बक्क सूरं। मनौं साधनं वृत्त संसार चूरं॥
छं० ॥ ३७ ॥
न्रिपं भ्रम्म जानैं इसे सूर पांचौ। मनौं पंग देही दुती अंग सांचौ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना।

दूहा ॥ मुक्कलि धर पत्ते न्रपति। दूत सु भ्रम्म सुचार॥
मनौं पंग देही दुती। सुबरि बुद्धि उद्धार॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज। करिय आदर अधिकारिय॥
देव भगति परमान। देव जिम जचत सु चारिय॥
बर मिष्टान सु पान। मध्य अम्रत फल धारिय॥
रंग रंग घनसार। अंग म्रगमद अधिकारिय॥
मतवंत वृत्ति छोड़ैं नहीं। डर न चित्त नन उच्चरहि॥
षट घोंस गए बित्ते सुभर। दै कग्गद गुन बिस्तरिय॥छं०॥४०॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना।

कवित्त ॥ हरन दच्छ ज्यों जग्य। सेव कीनी कुबेर बर॥
यों सेवा प्रथिराज। जानि पहुपंग करै नर॥
भगति भाव बिस्राम। ताप जप जाप देव सम॥
षट सुदीह कग्गर प्रमान। उद्धर्यौ धीर ध्रम॥
जं कह्यौ जुद्ध जैचंद बर। विधि विधान निरमान गति॥
जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ। कह्यौ राज राजन सुगति॥ छं० ॥ ४१ ॥

साटक ॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुम्भ्भैव गंध्रव गुरं॥
सोयं ता परचंड देबि बलयं, पंचे छठं [1]बंधवं।
नायं भीम द्रुयोध भूमित बलं, एवा किता अग्रजं॥
सोयं मंगय राज राजन बरं, मातुल्ल मातुल वरं॥ छं०॥ ४२ ॥

(१) ए.-वंधकं।

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना।

पद्धरी ॥ तिहि मंत काज प्रथिराज राज। बोले सु बीर भर बर विराज ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सत्त। इक अंग अंग पंचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा भ्रम्म सूर। देषत नरिंद बल करि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज। आहुट्ठ मभ्भझ सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद। आरंभ सलष पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारौति भुम्मि। साज्झह मद्धि नमनद्धि धुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि। भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छच छित्ति निद्दुर नरिंद। जैचंद बंध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू पट भ्रम पवित्त। बोलए अवर जैमंत सत्त ॥
इहि विधि प्रभाव सामंत रत्त। बोलै न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब। अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्प बर। लष्प लष्प सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजसू जग्य। आरंभ रंभ कीनौ अचग्ग ॥
जित्तए राज सब सिंघ बार। मिल्लए कंठ जनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद। आवहि न माल मभ्भत्त अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ। अस्समथ्थ सेस किम भूमि षाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज मंझ । भय मलिन मुष्प जनु कमल संझ॥
तिन दूत पंगु अग कहिय बैन । अति रोस कीन रग तैत नैन ॥
छं० ॥ ६५ ॥

बुल्ल्यौ सुमंत परधान तब्ब । कनवज्ज नाथ करि जग्य अब्ब ॥
बोलै सुमंच मंची प्रमान । उड्डरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हंकारि । साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
षुरसानषान बंदेति मीर । सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥छं०॥६७॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार । अप्पैति मेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार बज्जेति चंग । बड्डी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पोषंद बांद बालुकाराज । रष्षियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन वाहि । तब लग्गि ताहि टरि काल जाहि॥
छं० ॥ ६९ ॥

ए आसमंद न्रप करहि सेव । उच्चरहिं काम सो छोड़ि देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि । थप्पियै पवरि दरबार बानि ॥
छं० ॥ ७० ॥

सेंवर सँजोग अरु जग्य काज। बुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंचीन राव परमोधि जामि। घुम्मि सबार नीसान ताम ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि बार । भ्राटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अपार । आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥
छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय । तम हरन कलस रविव्यंब बीय ॥
धज मगन रोर जनु मधु अछीय । जनु रविय थंभ कैलास बीय ॥
छं० ॥ ७३ ॥

इक बार संजोइय सषिन प्रत्ति । मुसकाय मंद इह कहिय बत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति । बदलीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥
छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का संचार होना।

गाथा ॥ बंबुरे मलय मरुतं। जगुरे प्रिक परात पर पंचं ॥
उतकंठ भार तल्ला। मन मान संके मघं मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह बाखे। पुत्तलिका पानि ग्रहनायं ॥
एकंत सेज सहव्वं। लज्जा विया विमया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चंद्रायन ॥ कंचन ग्रेह सु मोतिय बंदर कैंर हुअ।
ता ओपम बर भट्ट विचार सुं एम जुअ ॥
मेर चरंनन गंग तरंगनि जानकी।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान कीं ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत संजोगी सोभई।
रति कौ रूप न होइ कामं तन लोभई ॥
मनों मधुक मन मंधि मनं मधि ही करी।
कोटि रत्ति कौ तेज रत्ति वह उन्हरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अंकुरु पान चरावत वच्छं। मनों माननि मिस दिष्षि अनुच्छं ॥
सहचरि चरित परस पर वत्तय। मनों स जोइ सँजोग मनमथ्थय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ बज्जाइ गाह श्रवनं। नयनं चित्त हि दिट्ठ लग्गाहं ॥
ग्रामान ग्राम लज्जा। अनंगा अंकुरी बाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुत्रीति संग। पटवीय बरष नन लसति अंग ॥
के जुवति संग द्वासद सुरंग। मिल लिपहि भाम नव नव अनंग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
संजोगि संग जुवती प्रबीन। आनंद गान तिन कंठ कीन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछंग चिबुकी। आलोली इछं संजोगी ॥
बरनौय पानि पत्तो। दौहास तामि अट्ठ मंभामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग। अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर। अंकुरहि मान मनमथ्थ जोर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुब्बन जुवत्ति रचि कहहि बत्त। श्रवनन्नि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोह लज्जा सुरत्त। निरधनिय मनहु धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सषिन्ना। था सुंदरि कथ बर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना। संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग बसंतह जोग। कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्ध मधुं धुनि होइ। बिना रस जोबन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिन लीन बसंतत राज। सु इच्छत सैसव जोबन बाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि। तहां बिन सैसव जोबन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज। भई न्रप बार बसंतह राज ॥
तहां बजि घुंघर जोबन भाइ। जगीवहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥८९॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ। कछु वसंत धरि भाव ॥
मानौं अलि दूतनि भई। नीदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु धास। मंजरिय तिलक पंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत। संजोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

रुधुरे हिमंत रितुराज मंत। परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
लुट्टहित भोर सुग्गंध वास। मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

बन बग्ग मग्ग हल्लि अंब मोर। सिर करत जानि मनमंथ्य चोर॥
चलि सीत मंद सुगंध बात। पावक्क मनों बिरहनी पात॥
छं०॥ ९३॥

कुह कुह करंत कलयंठ जोट। दल मिलहि जानि आनंग कोट॥
तरु पल्लव पीत अरु रत्त नील। हरि घलहिं जानि मनमथ्य पील॥
छं०॥ ९४॥

कुसमेष कुसुम नवधनुक साज। मंगौं सुपंति गुन गरुअ गाज॥
संजर सुवान सो मनहु नेह। विद्धारि जानि जुअ जननि देह॥
छं०॥ ९५॥

ऊषल्लिय चल्लिय चंपक सरूप। प्रज्जरहि प्रगट कंद्रप्प क्रूप॥
कर वत्त पत्त केलुकि सुकंति। बिहरंत रत्त बिछुरंत छत्ति॥
छं०॥ ९६॥

परिरंभ अनिल कंदलि कृपान। सिर धुनहि सरस धुनि जान तान॥
झंकुरि भ्रमूर अभिराम रम्म। नन करहिं पीय परदेस गम्म॥
छं०॥ ९७॥

फूलिग पलास तजि पत रत्त। रन रंग ससिर जीतौ वसंत॥
दिष्षहि तमंत जिहि कंत दूर। थकि बोलि बोलि जल रहिय पूरि॥
छं०॥ ९८॥

संजोग भोग जुवती प्रवीन। मै कंठ नद्धि दुह भगिअ लीन॥
रवि जोग भोग ससि नैश्व थान। दिन धर्यौ देव पंचमि प्रमान॥
छं०॥ ९९॥

सोय जग्य उदीपन बाल काज। बिलसन विलास मंझौज साज॥
पर उछव दषिन दीनौ मिलान। विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन॥
छं०॥ १००॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

श्लोक॥ अन्यथा नैव पिष्षंति। दुज वाक्यं न मुंचते।
प्रांपतं जोगिनी नाथो। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं०॥ १०१॥

दूहा ॥ जगत बत्त जोगिंन पुरह । सुनिय कित्ति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विभ्रंम मंन । नमि सामंत सुरज्जं ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । थप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन न्टप । तमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्ली न्टपति । थप्पो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ न्टपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उभ्भै पहुपंग । जग्य मंडै अबुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥
कच करतंत पाषान । हथ्थ छुट्टै बर भग्गै ॥
प्रजा पंग आरुही । बहुरि हथ्था नन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि धर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल । करौ सूर एकठ्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
लाष बीर मध्थियै । गयन कंकर्म प्रति साजन ॥
बनसी मध्य समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
परधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर । पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पंच सूर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
धाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरू दुजराम । राज रष्षन बल रापन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब सूर एक मन ॥
सामंत सूर गोयंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुकराव निंदह कढ़िय । षग्ग मग्ग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई वालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होनी ।

दूहा ॥ काज बीर बालुक सु क्रत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भंजन सु जगि । बाजि बीर अनभंग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतो का कहना कि कन्नौज पर ही चढ़ाई की जाय ।

पद्धरी ॥ सुनि मंत तंत जुग्गिनि पुरेस । मंनैव भेव मन मंडि तेस ॥
कज मंत संत जोगीय थान । सब बक्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

बुल्लाइ सबें भर राज काज । पंमार सलष सम जैत आज ॥
निढ्ढुरह राव जामानि जांद । चंदेल भूप भौंहा सु वाद ॥छं०॥११०
कैमास भासई तेज रासि । दाहिम्म बोल्लि अग्गैं उहासि ॥
पुंडीर चंद लंगा अभंग । बग्गरी देव षीची प्रसंग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामंत सूर मिल्लि एक थान । मंतेव मंत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुंम .... । ...., ... ॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज । तुम रुचिय बुद्धि सो क्रत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयंद तब्ब । भंजों निकट्ट कनवज्ज सब्ब ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन । सज्जि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मचाइ कूह कनवज्ज थाह । षंडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उब्बरिग वत्त जामानि जद्द । सजि चढ़ौ जूह कजि कूह नद्द ॥
भंजियै देस कमधज्ज राज । उज्जारि थान अचान राज ॥छं०॥११५॥
पुक्कार कूह उड्डे करार । भंजहि सु जेन भयं जग्य भार ॥
उच्चर्यौ चंद पुंडीर ताम । कैमास मंत पुच्छौ सु हाम ॥छं०॥११६॥
मतिं सिंधु सह गुन अग्गरेस । बुद्धंत बुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब्ब । भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम जंपै सभेस । कमधज्ज सुबल दल अस्स हेस ॥
बालुकाराय षोषंद थान । भंजियै तास हनि जुद्द जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दग्गियै धाम पुर नैर नेस । पुक्कार भार फुट्टै असेस ॥
बिग्गरै जग्य जैचंद राज । जस होइ कित्ति सुच्च सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भरे उहास । मन्नेव मंत सो धंनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम । थपि मंत पत्त निज निज्ज धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कपित्त ॥ रष्षि थान षोषंद । राइ बालुक्क प्रमानं ॥
दिय अड्डो चहुआन । जग्य मूलं रषि वानं ॥
रष्षि सेन समरथ्थ । गरू आदर भर मन्निय ॥
सो संभरि चहुआन । बीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत सूर बर बोलि बर । संझि बैठ ढीलीस पहु ॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि । हीर बीर लग्गे सु पहु ॥ छं० ॥ १२१ ॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाओ । पत्तौ धाम राज सा भृत्तं ॥
अंतर महल उहासी । आग्रंमेस तथ्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल ॥ बोलि तथ्थ मंची कयमासं । राजा मानिय दू आभासं ॥
और सबै सामंत सुरेसं । दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

गाथा ॥ सिंघासने सुरेसं । सम अरोहि धीर ढील्लीसं ॥
मत्त पधान विरारं । .... ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ बोल्यौ बंभन ष्हर तहां । कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि हम । जिन दिन चलै संघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना ।

दूहा ॥ तब बंभन कर जोर कहि । सुनौ सु बात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है । तिनै दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

पद्धरी ॥ रबि जोग्य पुष्य ससि तीय थान । दिन धन्यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिषन कीनौ मिलान । विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस । बिलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकट ऐराक बंस । चहुआन कन्ह अप्पौ उतंस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उंच जति पंषराव । समपौ सु राव गोयंद ताव ॥
मानिक्क महोदधि मध्य जात । निरषंत नैन थक्कै न गात ॥
छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत षुरिय विज्जल विभास । समयौ सु राव निढ्ढुरह तास ॥
लहराक तेज अग्गाध भम्ल । मापंत छोनि पुज्जै न ताल ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअंत भेस । समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति पंषार मभ्भ । समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीरु मानै न लग्ग । कूदंत मंत पय धर अलग्ग ॥
हथरोह सीह मन्नै सु भेस । विलहान जैत अप्पौ जु हेस ॥
छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरबाह बंस । कैमास तास अप्पौ सु हंस ॥

चेटकी चित्तरूपी रसाल । समयौ सु जइ जामान ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोझाल मंझ नाचंत थाल । गति रंभ जेम रचंत झाल ॥
न्रप जौह जौह जंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुबर भ्रमर मह्हरेस ताजि । समदेहु राज पाहार गाजि ॥
रंगेस उंच लष्यन सु-भेस । समपौ सु राव लंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदनेस साजि । माथुरह सरस कनक्क्य भांझि ॥
पटह्रत पटे परसंग राव । परमार सिंघ कंकन सुभाव ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बग्गरी देव दै तेजदाम । सिंघली सिंघ पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । मह्हनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुरेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बह्हत कुरंगगति कुरँगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोझाल फाल कनक्क सु देव । दूंगाल राव विंझह विरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

महरीस जाति महरेस थान । आजानवाह अप्पौ लुहान ॥
कनक्क कनक रूपी सुत्तेव । पहुमीस प्राय मनों दक्षदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात । पाहार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकत्ति साज सद्धै सुभाइ । पहुआन समप्पौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी ह्रर रथ किन्ति कीम । किंगन समप्पि लोहान धीम ॥
हैअवरह अवर अत देहु जाम । बोले समंझ गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

आएस दीन सा साहनेस। बिलहान देहु अंत अवर जेसं॥
सहव अप्प मुष सिलह दार। समट्ठेहु सिलह अत गात सार॥
छं०॥ १४३॥

अंदर प्रवेस पावक्क पुज्जि। आसीस मंच दिय गरुअ गज्जि॥
दिय अतिय दान हय मंगि राज। आनयौ तांम साकत्ति साज॥
छं०॥ १४४॥

बर प्राच जेम परठंत पाइ। मंडैति थाल जिम तत्त थाइ॥
कलमोर जेम मंडै कराल। मझ्झंमि पीठ मनु कठ्ठताल॥
छं०॥ १४५॥

बिस्साल उअर अच्छौ पडच्छि। निरषंत रथ्थ स्हरिज्ज सच्छि॥
मानिक्क मनोहर छब्बि लाल। हर बास भास गौसम बिसाल॥
छं०॥ १४६॥

बिन चसम चसम समकंति दीस। लालप्पि लोह चंपैति रीस॥
अचवंत सुच्छ अंजुलिय अप्प। चमकंत छाह भय तेज वप्प॥
छं०॥ १४७॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग बाग। बर नट्ट जेम लेयंत लाग॥
मंडंत उड्ड तंडव सु उंच। परसंत पाइ मनु ध्यान रुंच॥
छं०॥ १४८॥

अति उंच हट्ट भर पुरासान। पित मात विमल कुल संभवान॥
अंनिय सु साजि सिंगार पाट। विंजंति चोर जिम पुंछ राट॥
छं०॥ १४९॥

चमकंत पुरिय दामिनि दमंकि। पटतार तार धरनिय धमंकि॥
मंगेव चढ्यौ चहुआन जांम। जै जंया सबद आयास ताम॥
छं०॥ १५०॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा॥ चढ़ि चल्लौ प्रथिराज हय। जै मुष बंदी जंपि॥
बिकसे सूर सुभट्ट तन। कलच सु कातर कंपि॥ छं०॥ १५१॥

जय विध्वंसे पंग कौ। धर लुट्टैं परवान ॥
मंति सूर सामंत सह। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ इक तौ सहवलयं। एक तौ होइ सहसयं बरयं ॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्षं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजौ रंजन बर ॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर ॥
मनों सूर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल ॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल ॥
षोषंद काज जीपन प्रथम। बालुक्कां भंजन सुभर ॥
निडुर नरिंद पुंडीर भर। करन राज अग्गैं सगुर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

सैना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा ॥ गोडंडा षल मित्तरौ। धर जंगली विहान ॥
यौं बंधे सह सूर बर। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५५ ॥
है गै बधि बंधन विविध। धन पंची ग्रह बीर ॥
चावद्दिसि धर पंग की। ज्यौं कलपंतर तीर ॥ छं० ॥ १५६ ॥

गथा ॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे सूरयं धीरं ॥
ज्यौं गुर सूलत अंगं। सो लग्गे सिंधरं पानं ॥ छं० ॥ १५७ ॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल ॥ संबर काम चल्यौ चहुआनं। बालुक्का परदेस प्रमानं ॥
है गै दल चथुरंगी पानं। भ्रंम भंजन मन उग्यौ भानं ॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढ़ि चल्यौ राज चुहान। बोलिव सूर सुमान ॥
गिन लिए सूर सु चित्त। भर सहस सजि दस सत्त ॥ छं० ॥१५६॥
नीसान दून समान। भेरीय साद सुरान ॥
बल बढ़िय राजस बीर। जनु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए संकल एकत जाम। गुन सकल ग्रह विंदु राम ॥
अग्गै सु कन्ह चहुआन। तां पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उछंग अंग सनाह। सथ लिए सूर संबाह ॥
मड्डंस जंगल देस। चढ़ि चलिय दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसिं झज्यौ जानि कराल। दाहंत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग पोषंद पास। बैढ़ि बीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३ ॥
मन मुष्य साजहि जुद्ध। हनि ताहि क्रम्महि सुद्ध ॥
कलि कूह मंचि करार। धर अरिन कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
पिनि षेह लोपिय व्योम। दिसि बिदिसि धुंधरि धोम ॥
रिधि मंधि लुट्टहि अप्प। वर सस्त्र सस्त्र सुदप्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक। मधि हनहि आप अनेक ॥
बहु मोल वस्त्र समोच। सम हरहि सद्ध हि सोच ॥ छं० ॥ १६६ ॥
संचरिय धाँह विधाह। हड्डाय दिसि दिसि राह ॥
इल सैल व्योम संपूर। कलि कूह हत्ति करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सब नैर भंगर कूक। सद्धियं अंतस जूक ॥
पोषंद नर सुर थान। संभपुत्त अत्ति उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

बालुका राय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना।

मुरिल्ल ॥ छुट्टे दिसर दिसा चहुआभं। संमर काम समावर जानं ॥
परजा मिल्लिय करै बुंबानं। संभरि भारथ रए रिसवानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआंन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ दिसि पहु उट्ठिय धोम। भोम लग्गिय आकासह ॥

(१) ए. कृ.- "संमरित भर थर हरि सवान"

निधि लुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसह ॥
निधि हति निधि धट्टिय। सु रंक बढ्ढिय लच्छिय पन ॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुष्पन ॥
घरियार घरिय बढ्ढय घटै। सो ओपम परमानियै ॥
निधि पत्ति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर जानियै ॥
छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुञ्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति षोषंद। सुनिय बालुकाराय बर ॥
धर धामह कमधज्ज। भुज्ज अंडिय कपाट भर ॥
अरि भय किम औसेर। दड़िय अग्गर न्रप दीनिय ॥
राज तेग यों लग्ग। जोग मांथा क्रम चीनिय ॥
जद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय ॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगत्ति रूप होइ अनुसरिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

धोम अंषि देषीय। कान संभरि पुकार बर ॥
समै जागि लषि कलंक। जीव अब रहै नहीं धर ॥
रबि नट्ठौ ससि छिप्यौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर ॥
पवन गवन नन करै। सीत पालैं न अत्ति बर ॥
जो चलै मेर धूवह चलै। भिलैं सात जोगी तदप ॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक बय ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाह धाह षो षंद। सुनिय बालुक राव रवं ॥
लघु बंधव जैचंद। राइ संकेस असंभव ॥
सो संभलि कलि कूह। जक छड्डिय दिसि दिसि दर ॥
नह सुनियै अस्तुत्ति। नयर सब गाजि गहब्बर ॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ बत्त कारन सु कल ॥

मम करहु धाह थिर होइ करि। कवन तेग बंधी सु कल॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना।

किन रष्षो सुत्र तरनि। कहै नैरीपति संजम॥
आज राज जैचंद। कवन उड्डग करै दम॥
तबै आइ धाह्नन। सुनहि मंकेस राउं सुत्र॥
दीलीवै चहुआन। तेन उज्जारि जारि भुत्र॥
सुनि बांद्द वादि नीसान किय। अप्प बोलि सज्जे सुभर॥
सज होइं चढ़ौ बढ्ढौ सिलह। अनीं बंधि आषाढ़ बर॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना।

चढ़ि आयौ चहुआन। देस विध्वंसिय अग्गिय॥
बर बालुक्का राइ। बीर बाजे रन जग्गिय॥
अवित ढीठ चहुआन। बरै बीरं सुत्र आनी॥
धर धूसे धन लुट्टि। जग्य धूसे पंगानी॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि। बालुकराव सु भुक्किया॥
प्रथिराज सेन संम्हौ विड्डर। ताजी तुंग सु नष्षिया॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन।

चढ़त राव बालुक्क। आस लग्गौ भै भग्गा॥
सो ओपम कविचंद। देव बोनीन चिरग्गा॥
ज्यों नव बल्लभ प्रीति। काम कामी सी जग्गा॥
सोइ सनेह सुबंध्रं। प्रीति लागै तन लग्गा॥
पुक्कार सथ्थ साथें चल्यौ। कल सथ्थें गोली चलै॥
रोर चमक साथें उठै। त्यों बर कवि ओपम पुलै॥ छं० ॥ १७६ ॥

(१) ए. को. मुनर।

चहुआना संमुही । राव बालुक उठि धायौ ॥
छीन लगन पथं दूरि । बरन बरसें बर आयौ ॥
तुच्छ दिवस क्रम बर्हत । क्रत्य आतुर चित चाइय ॥
सबै सेन संमूह । बीर रोसह बरलाइय ॥
लागयौ रोस सामंत सथ । अप्प थान नन तज्यौ किहूं ॥
दिठ परत राइ चहुआन पर । बालुक बर साज्यौ समहुँ ॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या।

दूहा ॥ सेन सहस बत्तीस भर । चढ्यौ स जंगल जूह ॥
नैर छंडि बाहिर चले । तन्न रज इच्छिय ऊह ॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना।

कवित्त ॥ षंधे षेत करसनी । सूर धावै चावद्दिसि ॥
धन लूटत ज्यों रंक । लज्ज लग्गै न बरं तस ॥
अंबरीष ग्रभ श्राप । जेम दुर्वास चक्र कस ॥
जिम देवासुर देव । सबद जिम तरै कब्बि रस ॥
अहत्त जुद्ध हिंदू दुहन । सुबर बीर लग्गे बिरद ॥
संप्रत्ति बीर बाराह बर । सुथिर भए त्रिंमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥

वाघा ॥ रन डंबर अंबर उभानं । देषे ड्डहरं सेन समरानं ॥
सज किय सेन अप्प परसंसे । आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
छं० ॥ १८० ॥

सुनियं तामं नाद निसुभं । आयौ सेन सम्मुष चहुआनं ॥
दल दुअ ताम हुअं दे ठालं । बज्जे नद्द सद्द भूआलं ॥ छं० ॥ १८१ ॥

गाथा ॥ दल दुअ हुअ देठालं । गज्जे नाद्द बीर बिसरालं ॥
सज्जे सेन सु चालं । बंधे फौज कमधं फासि कालं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना।

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देषी चहुआनं। सज किय सेन आप सब्बानं ॥
बंधे सिलह सूर सूरानं। गज्जै सोस सुभर असमानं ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर बर। गज्जे गेन सु लग्गि महाभर ॥
बंधे गरट चले गति मंदं। मानि सूर सामंत अनंदं ॥छं०॥१८४॥

दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ जीवंतह कीरति सु लभ। मरन अपच्छर हूर ॥
दो हथान लड्डू मिलै। न्याय करै बर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनों सयन। दिट्ठे दिट्ठ करूर ॥
सामिध्रम्म सा क्रम गुर। सो संभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिरं। काल हक्के सुरं ॥
एक एका गरं। बीर डक्कं करं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार बाजे हरं। गेनं लग्गा नरं ॥
अंत दंती जरं। नाल कढ्ढै सरं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हंस चोहं चरं। घात सोभै सरं ॥
भार वडप्फरं। लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवती सेन्न रं। वज्ज नाली करं ॥
पंग वीरं छरं। सूर मज्जे जुरं ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिंघ छुट्टै पलं। बीर मत्ते दलं ॥
ढाल ढालं ढलं। बीर जूपे मिलं ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बालुकाराय का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बर बालुकां विसाल। सब्ब बाहंत उचारिय ॥
पंग भूमि रतनंन। स हथ्थ घाए अधिकारिय ॥
मद्धि समुद बालुका। पुंछ धीरा गल लग्गा ॥
रतन षटू सत छंडि। जिरह लय लरने लग्गा ॥
दल मद्धि एम पोषंद प्रति। ज्यों ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त बन बायतें। चल पत्तन कर कारनवै ॥छं०॥१९२ ॥

बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन।

अँग चतेन बहि हथ्थ। सस्त्र लागत जड़ धारिय॥
लोह लगत मिलहानं। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करैं। लाज संका न हिसा करि॥
छचं भ्रम्म चूकंत। सूर संकै न पग्ग धर॥
नव बधुअ संक रत्ता गुरुअ। कुल संकै कुल बधु सकल॥
कमधज्ज जुड चहुआन सों। सुबर बीर घरि पंच छल॥छं०॥१९३॥
घरिय पंच साधंत। सूर साधै असि मर नर॥
बालुका अरि राज। सबै भगा जु क्रम्म धर॥
पग पुच्छानन दियै। षेल असिवार परिमानं॥
मोष मह असि रेष। परज रज बंने धानं॥
अति बीर सुग्रह तजि रोस बर। इम उकंस चहुआन रिन॥
न्निप जैत बीर विभ्भर भगति। सुबर बीर आरन्न धन॥छं०॥१९४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत मंच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल लाल रसि॥
कमल विमल विछुरंत। कमल नंचत बर बरतन॥
इक च्यारि सिर च्यारि। नीर किन्नौ जु बीरं गुनं॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बालुकाराव चहुआन सों। दुतीय बीर भारथ्थ सजि॥छं०॥१९५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। भाल चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक न चलंत सूर भुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति जैसे गतिमानं॥
कुटिल चिया चंचल सु। बीज चाव दिसि धानं॥
जिन मुष सु बीर न्निम्मल सु बर। सार झलै ते जलझली॥
में मंत पंथ रुक सुबर। मुगति पंथ पंथा षुली॥ छं०॥ १९६॥

दूहा॥ मुगति मग्ग पंथा षुली। सबर थापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिग सूर॥ छं०॥ १९७॥

बालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ बीर कुंड मंडलिय। परिय बालुकाराय फुनि ॥
चंद मैंडि ओपंम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भए। तेज बडवानल तुंगं ॥
हेम मझ्झि नग धरिय। सूर फिरि क्षेर सुरंगं ॥
जयपत्त जुद्ध बोलिय सुभर। जं बोल्यौ तं कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गे गिलन। चर अगस्ति मंतह नयौ ॥
छं० ॥ १९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

चोटक ॥ घरिएक भयानक बीर हुअं। बर बज्ज निसान निसान धुअं ॥
अमयं अम षेद कटंत बरं। मिटि गाबर सीस नवाइ गुरं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दुहु बीरन बीरह हथ्थ धकं। सु मनौ कर तोर निसान ढंकं ॥
दुहु बीरं बिरोधत हथ्थन ही। दुहु दीनह जानि गुमान गही ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परे रुधिं सीस कनंछ धरे। सुमनों गिर तिंदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि सूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनारं परै। निकसी अनु मध्य भुअंग तिरै ॥
सु किधौं ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो बल लागत फूल भरी ॥
घन घाव कियें सिर सूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए-चमू। (२) को मति।

कवित्त॥ भौर परी प्रथिराज। देषि बालुका मंत गज॥
चंपि मुट्ठि द्रिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि॥
टुट्टि सीस मुति बरसि। रुधिर भीजै लग्गे असि॥
सुमनौं मग्ग घुति पान। चंपि निकलिय ओपम तस॥
जुद्ध स एह भंजो जलह। आदि चंपि सो दिन चरिय॥
दैवत्त बलह प्रथिराज दुति। छंद चँदकवि उच्चरिय॥ छं०॥ २०३॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ सँभारे सबै स्वामि भ्रम्मिंति सूरं। बरं बंस रस्सं असं संस नूरं॥
तबै उच्चऱ्यौ .... दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं॥
छं०॥ २०४॥
ममं साजियं फौजं सु ओजं कमंधं। करौं साज आजं अनी अन्न संधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दप्पौ। नरंनाह कंधं तुमं काम थप्पौ॥
छं०॥ २०५॥
मुषं अग्ग कन्हं सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं॥
बरं सज्जियं बाहयं निढ्ढुरेसं। मध्यं रच्चियं अप्प राजगं तेसं॥
छं०॥ २०६॥
सचे सब्ब राषे सु सामंत सूरं। जुरे बीर वाजिच बज्जे करूरं॥
चले फौज सज्जे समं भट्ट भट्टं। हकारं भरं सेन देषे गिरट्टं॥
छं०॥ २०७॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चऱ्यौ जंन्न बालुक्क रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्प दुष्पै अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्राम थानं॥
छं०॥ २०८॥
भयौ काम काजं अपं चंद आजं। निजं भ्रम्म मन्ने कुलं क्रत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दठ्ठ जुद्धं सनठ्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन वठ्ठं॥ छं०॥ २०९॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

मिल्यौ बालुका राइ गज्जं नरिंदं। समं सेल चहुआन करि षग्ग दंदं॥
सजी सैन चतुरंग तारंग रुष्षं। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुष्षं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमानं। भिरें सेंन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
बले दून सेनं मिलं बान बानं। मनों बूंद भद्दं मद्दं मेघ जानं॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूरं लगे हथ्थ बथ्थं। दुअं उच्चरें आन ईसं दुअथ्थं॥
बजी सार धारं समं सार सारं। मुषं उच्चरे मार मारं करारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

समं बीर बाजिच बाजिच बाजे। धरक्कें धरारं सु गो गैंन गाजे॥
तुटैं सीस दीसं रुरें रुंड मुंडं। परें गज्ज भाजें सु तुट्टैं भुसुंडं॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जट्ठरं सट्ठरं सं विहारं। फरं फेफरं डिंभरू तुट्टि भारं॥
विछुट्टैं डरं डिल्लरं अंतरेसं। भभक्कंत श्रोनं सस्रोनं अनेसं॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटें कट्ट बाजंत षग्गं कसूरं। मनों कट्ठ कब्बारि कूटे कुहारं॥
उरा फार फूटंत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थवथ्थं समं भट्ट पट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दट्ठं सनट्ठं प्रहारं। जरादं जरं तुट्टि उट्ठंत सारं॥
तटक्कंत टोपं गुरज्जं प्रहारं। फटै सीस दीसें विकट्टं विहारं॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कंत कंधं कडक्कंत हड्डं। फडक्कंत फेफं सरे फंस मड्डं॥
दडक्कंत श्रोनं प्रहारे सपूरं। गडक्कंत कंधं सु घायंति ऊरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धरं सीस हक्कंत धक्कंक जीहं। नचै षग्ग कंमंध धप्पंत दीहं॥
हहक्कंत हक्कंत नाचंत बीरं। पलं चारु गोमाय गाजंत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

घहं राइ चौसट्ठि उपट्टि मद्दं। नचै ईस सीसं डकै डक्क नद्दं॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं॥
छं०॥ २१९॥

प्रसारं प्रवारं घनं श्रोन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं॥
थलं मंस हड्डं सुथट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं॥
छं०॥ २२०॥

हहक्कार हंकार हक्कार हक्कं। हबक्कं हबक्का धरे धीर धक्कं॥
गहै केस केसं प्रहारै परेसं। हने छंडि आवद्ध आवद्धनेसं॥
छं०॥ २२१॥

समं सूर बथ्थं लरै सूर सथ्थं। बिनानं सु मल्लं पयं ढीक पच्छं॥
कुलं अप्प ईषे बरै आन ईसं। उकसंत क्रंसं रजे बीर रीसं॥
छं०॥ २२२॥

बिना पाइ घायं करै षग्ग टेकं। हुये षंड षंडं विहडं षिसेकं॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सा सूर भारं॥
छं०॥ २२३॥

बरे इष्षि योरष्ष नौवीर दंदं। रसं बीर नारद्द नंचै अनंदं॥
इसों जुद्ध हूतें दुअं जाम वित्ते। मिरें मंत माहिष्ष ज्यों मंस चित्ते॥
छं०॥ २२४॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिट्ठ सोकी समं सज्जि घायं॥
तबै बालुकाराइ उभ्भारीय षग्गं। करै कन्ह हेलं रुहेलं चिभंगं॥
छं०॥ २२५॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कद्यौ कन्ह झक्कं सु सेलंनि हट्टं॥
हयौ सेल षंडं कमंढं सजूरं। सिल्है फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं॥
छं०॥ २२६॥

धरं झारियं कन्ह सेलं जु नंषे। पर्यौ बालुका राइ सो भूमि धष्षे॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं॥
छं०॥ २२७॥

भगी फौज कमधज्ज सा छंडि षंतं। हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पन्यौ राव सारंग। बीरं सद्दी बड़गुज्जर ॥
ईस सीस संभन्यौ। सोइ लीनौ स बंधि उर ॥
गंग दुचित नदि कंपि। उमा भै दीन प्रमानं ॥
सीस ईस ससिकंठ। हथ्थं बड़गुज्जर थानं ॥
रुंधेव पंच पंचौ मिलिय। सबर बीर तत्तौ सँगति ॥
षोषंद राव झुझ्झयौ सरस। स बर बीरं भारंथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

बालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का जूझ जाना।

परतन नर भर भीर। सिंधु बज्यौ चहुआनं ॥
जे हरुए उत्तरे। गयौ बहु हथ्थ निंधानं ॥
कुल भारें रजपूत। रहे पथ्थर परिमानं ॥
.... । राज चल्यौ चहुआनं ॥
बालुकाराइ भारे कुलह। पथ्थरं ज्यों मंडे रह्यौ ॥
चहुआन बार बज्जी विषम। तंत बेर उड्डि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

बालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना।

चाहुआन भय राज। सुनत बालुका रज्जि बर ॥
अब लुट्टौं घर धेन। अबहि दुभ्भिझयै परद्दर ॥
धर किपाट बालुका। द्वार अंतर संपत्त ॥
पूरनं आहुति दीय। पंग जग्यहं आहुत्त ॥
बालुकाराइ पंजर पन्यौ। देषि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भंजि दोइ बंधि धरि। चर नठ्ठा कासी बद्दर ॥ छं० ॥ २३१ ॥
तजि सु नारि भंजि पीय। विसरि आतुर भय पंजर ॥
पिय कोमल सुंदरी। परत पिच्छल सद्दर धर ॥
कंचन पत्त परास। द्वार कल मोती धारे ॥
नूत पच परिहार। चंद ओपंम बिचारे ॥
तारक बाल मंगलति ग्रह। कै नष सुंदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि। जातें चालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ परत सु बालुक राय रन। सहस पंच सम संध्य ॥
उभय घटी मध्यान उध। धनि सामँत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त षत। परे सु कट्टि रन थान ॥
सबे सत्त सामँत कुसल। जै लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुकाराय। सेन सध्धौ चहुआनं ॥
पंग जग्य बिगरंत। अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर। सेन धुंसै दुज्जन दै ॥
प्रथम गारि परि कन्ह। बलि बारुन बंभन वै ॥
सामंत सेन एकट्ठ हुअ। संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर। चंपि चुहान बजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पर्यौ जुद्ध बालुका। मीर बद्धा षंधारं ॥
ते सम पंग कुमार। षग्ग बज्ज्यौ पर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस। रीठ बज्जी आराहर ॥
मनों मेघ मद्धि बीज। बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस संभ्रभ्भै मिलिय। धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
भारथ्थ पथ्थ दुत्तौ विषम। चंद छंद बत्त कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयारु तूरं। गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं। सजियं पति दंती विमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुसलमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनों पंक्तियां तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनों पंक्तियां छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

भुजंगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआनं । बजी सार सारं सु धारं प्रमानं ॥
लगी डंबरी रज्ज आयास छायं । निसा पंति गिद्धी रुधिंहन्न पायं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहां चंद बरदाय ओपंम तब्बी । मनों बाद गंठी परे ऊगि रब्बी ॥
मिले जोध हथ्थं तिबथ्थं बकारे । परे चंद भट्टीन छुट्टे पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

बजे घाइ आघाय घायं घुरक्की । मनों नीर मभ्भें तिरंजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगं सु तूटतं दीसै । मनो मुक्कि छुच्छू छुटे बीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

घरी अद्ध दीहं रह्यौ ता प्रमानं । तबै बाहुर्यौ पंग पाइक्क मानं ॥
सबै मीर बंदा तुरक्काम षानं । कहैं पक्करौ चाहते चाहुआनं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

धर्यौ पंग मोरी सु पंधार रारौ । निनें रोकियं कन्ह चहुआन भारौ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिनं आनि स बींट बर । मिलि रोक्यौ प्रथिराज ॥
पंति पंग हय जंग परि । तिहु पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भूत पंग घन । लाग निसानति बान ॥
विंटि सेन प्रथिराज बर । जानि समुंद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । चढ्यौ सामंत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिष्ष । पर्यौ चिंता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै बार । मरत इन बार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजूं सु जूह । उतकंठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अंदेह मनि । मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रचि फेर न परें । मुगति बंध बंधे सघन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

घरिय अड्ढदिन चढ़त। सूर छुटि जुरन सु बड्डे ॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोऊ सड्डे ॥
अनी मुष्प जोरि मुष्प। सीइ उच्चाय सु डारिय ॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि घरियार सु मारिय ॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर यट्ट नट षिल्लयौ ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जनं भर ढिल्लयौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और मुसल्मान सेना का घोर युद्ध।

भुजंग प्रयात ॥ करी ठेलि दूनौ अनी एकमेकं। घटं लष्प दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुदीनं। उतं उथ्थलै भेजि प्रज्जानि धीनं ॥
छं० ॥ २४७ ॥

गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसत्त लोई ॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै ॥
छं० ॥ २४८ ॥

परें बथ्थ बथ्थं विरुझ्झाय लुट्टैं। मनों मुक्ति सारी दुअं हथ्थ लुट्टैं ॥
बहैं बान कंमान जंबूर गोरं। सकें उड्डि नाहीं तहां पंषि तोरं ॥
छं० ॥ २४९ ॥

महाबीर धीरं लरें ते तरप्पैं। मनों पंग जंगी बल्ली पंष अप्पैं ॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उधारं ॥
छं० ॥ २५० ॥

हयं अस्सवारं समेतं उठायौ। मनों तापरी ताप माते उचायौ ॥
घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चै वेर जित्यौ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना।

कवित्त ॥ भगिय सेन सा पंग। भगिय चतुरंग भुज मोरिय ॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
बर शृंगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं ॥
कायर हथ्थिय प्रमानि। समुद उत्तरि चहुआनं ॥

बालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मथ्थह रह्यौ ॥
दोहित्त पंग कमधज्ज कौ, । संभरि वै हथ्थह-ग्रह्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥

दूहा ॥ बर बालुका सु राय नृप । निधि लुट्टिय चतुरंग ॥
विय सुदेस बर भंजनह । बज्जा बज्जि सु जंग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भील गत हुंत । सोइ कीन्निय करतारं ॥
जंघ गत्ति धरि लंक । लंक जंघा मति सारं ॥
नैनह दिद्व सरोज । केस अहि विंध सु किन्निय ॥
परबत संभ चढ़ंत । मेलि सांई सुध बन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज बर । गाम्रनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस बास सासन सु पिय । सुबर बीर बीरोधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजंगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंदं । लगी धूम आयास सो भंजि चंदं ॥
तुरी बारजं राय पोषंद बद्दं । तहा बालुकाराय संग्राम सद्दं ॥
छं० ॥ २५५ ॥

तहां बालुकाराय दानं सु मानै । तिने भंजिया भूप घटि चाहुआनै ॥
पगं पग्ग पद्दे सु धक्का हकारई । जहां पारसीराव सूरं गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥

छतेरी छनेरी भंडेरी बरारी । तिनं चंद चंदेरि नैरी निहारी ॥
जिने तारिया कासमी कन्दरायं । जिने मंडिया जुद्ध प्रथिराज सायं ॥
छं० ॥ २५७ ॥

जिने आल पिंडाइ रायक चक्के । बरं रोरिया दाइ संग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गंग पारे । जिने संभरी थाट तंडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥

जिने भंजियं भीम पुर भीम भंजे । जिने भंजिया जाय गीधंग हंजे ॥
जिने भंजियं जाय प्रथमं सु कासी । भए सूर सामंत उत्तं उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं जाय मेवात ग्रामं। जिने बैर सों सेन सज्जे समानं॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सबे पाय पारी॥
छं०॥ २६०॥
जिने आलगी जोग षंडे षषेली। जिने मायुरी मोह मोहंत लेली॥
जि सोरीपुरं रोरि पारा जगायं।.... .... छं०॥ २६१॥
कियं दीन बंबारि प्रथिराज तोरी। षगं षीच षंगार बह्मोच मोरी॥
तहां ग्रीव बंबारि अग्रीव फूटी। तहां गोधनं धेन चौनान लूटी॥
छं०॥ २६२॥
जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी। ते तजें पो पीय कंठं सु गोरी॥
तिनं तीर नद्द चालहं चाल झंपे। तहां झंपरहि जेम गज झंप लष्षे॥
छं०॥ २६३॥
तिनं चीर संमीर झारंत तुट्टे। मनों रत्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै। .... ॥ छं०॥ २६४॥
तमंचे सिषर जमदाढ लग्गे। .... ॥
तिनं धम्म प्रज्जारि मिटी मग्गएनी। तहां चलहि तिन तेज मुषचंद रेनी॥
छं०॥ २६५॥
तहां बीज फल जानि घन कीर धाए। तहां दसन बालभे दसनं लिपाए॥
तिनं सद्द सहरोस रुद्दरोस संकी। तहां थर हरे थकि रही हीन लंकी॥
छं०॥ २६६॥
कव्वि रट्टि रटति पिय पीऊ जंपै। रभ रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै॥
॥ छं०॥ २६७॥
वाघा॥ सेंबर काम चढ्यौ चहुआनं। कंपै भै चिय दुज्जन वानं॥
बर छुट्टत नीवीं न सम्हारै। लेहिं उसास प्रहार प्रहारै॥छं०॥२६८॥
अंगुरि एक ग्रहै कर बालं। पूजै वीर निवारत्ति जालं॥
थान थान विहवल भइ बालं। मुत्तिन उर बर तुट्टित मालं॥
छं०॥ २६९॥
सो ओपम कविचंद सु पाई। मनों हंस कटि पंछ चिलाइ॥
छं०॥ २७०॥

दूहा ॥ गय मंदा चष चंचला। गुर जंघा कटि रंच ॥
पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ। विपरित दरन विरंच ॥छं०॥२७१॥
कवित्त ॥ उभट सतै सहर। घरिनि तिन पुलिय सुरन बल ॥
कुसुम कंप घन उच्चर। भमर भर करय जु अलि तन ॥
कंपि करग तारंन। अंब पल्लव कि कीर मति ॥
धाह सवद उच्छलीय। कंग्ग कलाठ कंठगति ॥
सिर चिहर मोर विसहर गिल्लिय। भनिस चंद कवियन वयन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथियराज इम तुअ दुअन ॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना।

हनिग राव बालुका। भंजि सोधंद महापुर ॥
लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि। कनक पट कूल नंग भुर ॥
करत सास उद्दास। छोहि जोरी बर दंपति ॥
फिर्‍यौ राज चहुआन। ज्ञान देषे हरि संपति ॥
बाजंत नद्द नौसान बर। धाह प्रकास हिलोर भर ॥
रंजिव जग्य जैचंद न्रप। थान बयठौ कंपि पर ॥ छं० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन।

सुनि विधात अव दुष्य। जायषे मानव दुष्यं ॥
चंद दुष्ट अजहूं दहै। विरहिन अप रुष्यं ॥
रिपु जानत चहुआन। मत इह गत्त न कित्तौ ॥
चष चंचल गति मंद। गुरू जंघा फिरि धत्तौ ॥
पावर सुगत्ति धरतौ तनह। मन अंगम गिरि चढ़न कौं ॥
विचारि वत्त भवपित्त मन। तौ बैठति हम गढ़न कौं ॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना।

दूहा ॥ रन हारी पुकार पुनि। गई पंग पंधाहि ॥
जग्य विध्वंसियं न्रप दुलह। पति जुग्गिनिपुर प्राहि ॥ छं० ॥ २७५ ॥

इति कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके बालुकाराय बधनो नाम अड़तालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥

अथ पंग जग्य विध्वंसनो नामं प्रस्ताव।

(उंचासवां समय।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना।

दूहा ॥ जग्य उजाये अट्ठ दिन। अट्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माघह पुब्ब पष। सुंदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना।

पद्धरी ॥ तिम समय ताम कनवज नरेस। क्रत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँबर सँजोग सम जग्य काज। विथ्थुरिय रिद्धि गति विविध राज॥
छं० ॥ २ ॥

शृंगारि सहर विविधं विनान। आनंद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजैं सु भाइ। जगमगत षंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥

वासन विचित्र उत्तरन तरम। मंडप्प उंच सज्जे सु धाम ॥
बासनह श्रेन विधि बंधि बनन। सोभंत धज्ज बंधे सु थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

छोनी पवित्र सड्डी सवारि। द्राबै सु मंडिं सुर सम अपारं ॥
गावंत थानथानह सु भेव। मंगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥

जलजांत माल तोरन कुसुम्म। बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्रपति अनेक थान। उद्दार मंत्ति षिति औसम्रान ॥
छं० ॥ ६ ॥

संमर संजोग लष्षे सु भूप। संपत्त लाज हय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तानं थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान ॥ छं० ॥ ७ ॥
चिंतै सु चित्त कमधज्ज राइ। केहरि कंठेर बर मुत्ति काय ॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सस करह साज हय गय सुभार ॥
छं० ॥ ८ ॥
वाजे अनंत बज्जे विवान। बहु नृत्य करत रंजंत तान ॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। कतयंत कंठ सा दिष्ट रूप ॥
छं० ॥ ९ ॥
भूलंत नैन देषत विनान। सझंत चित्त साकृत्य जान ॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक कोटि नाचंत भेव ॥ छं० ॥ १० ॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव ॥
इहि विद्धि सत्त अह वित्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर द्वार ताम ॥
छं० ॥ ११ ॥
कर पंग मग्ग आगें सु बीर। सर सुक्कि मुक्कि सुमनं प्रसीर ॥
सुनियै न सद्द नीसान भार। दरबार भइयं इत्ती पुकार ॥
छं० ॥ १२ ॥
तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अधम्म किन करिय काज ॥
उच्चंत ताम धाह्र सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त ॥ छं० ॥ १३ ॥
सब देस भंजि षोषंद थान। बाल, कराय हनि देषि प्रान ॥
छं० ॥ १४ ॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा ॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि समुद लवन्न ॥
इन सत्तन सम ऊफने। बोलिय कमध वचन्न ॥ छं० ॥ १५ ॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त ॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्गि कूंनह अगिनेयं ॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैऋत्ति सुनेयं ॥

(१) ए.-साय।

पच्छिम अधिपति वरुन । वाय कू"नं वहवानं ॥
उत्तर हेरि कुबेर । कून ईसह ईसानं ॥
ऊरड ब्रह्म पाताल नग । मान पंड़ि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज कालिह आनो पकरि । तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमंत उपारिय । अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय । सायक पंच भारथ बग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना ।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ । बुल्लो सरोस कमधज्ज राइ ॥
धन भरौ लष्ष वे सरस वाउ । करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥
सज्जौ गयंद सत्तरि हजार । अरु असीलष्ष तिष्षे तुषार ॥
पाइक्क कोरि धानुष्ष धार । स्रकोरि सजौ बंके भुभार ॥ छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स बाज । इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पकरों दुअनं जिन जाइ भाजि । षूनी सु भ्रात को ठोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥
गहिलेउ पिसुन पारो बिपत्ति । जैचंद कोपि बोल्यौ न्रपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय । दिसि सुरधर उपदेस ॥
छिति रष्षन छिति परस बर । सुनि पंगुरें नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना ।

पद्धरी ॥ थकि वैद वेन बिप्रान गान । आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास । बिग्गर्यौ जग्य मंची विसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

बंधौं सु चंपि अष चाहुआान । विग्गन्यौ जग्य निहचै प्रमान ॥
जोगिनी राज चिंचंग जोइ । बंधौं समेत प्रथिराज दोइ ॥ छं० ॥ २४ ॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर । लिर्वार करौं चहुआान ओीर ॥
आहुट्टराज प्रथिराज साहि । पीलौं जु तेल जिम तिल प्रवाहि ॥
छं० ॥ २५ ॥
संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ । इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ ॥
सुनियै न पुन्य सभ मध्ध राज । जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं० ॥ २६ ॥
पुच्छीस ताम संजोगि बत्त । कहि धाह कोन मोंपित विरत्त ॥
उच्चरी ताम सहचरी एक । बंधी सु राज प्रथिराज तेक ॥छं०॥२७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त । चहुआान पान देषे सउत्त ॥
बालुकाराव सध्यौ सु तेन । षोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन ॥छं०॥२८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना ।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्य । चितां सुचित्त गंधर्व कथ्य ॥
संजोगि जोग बर तुम्ह आज । व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज ॥
छं० ॥ २९ ॥
द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति । पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम । मानौं सु मुझ्झ इह द्रढ़ नेंम ॥
छं० ॥ ३० ॥
चहुआान सुबर मोसत्ति मत्ति । छंडौ स अवर लालिच अत्ति ॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम । छंडेव अव्व विधि व्याह काम ॥
छं० ॥ ३१ ॥
दूहा ॥ गंठि जुन्हाइ उन्हाइ निजु । राइ बरन निज दान ॥
अति अनुराग संजोगि कौ । करहु न प्रभू प्रमान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना ।

कवित्त ॥ बालवेस बय चढ़त। भ्रम्म रष्षें न पुचि ग्रह ॥
भूमि भूमि न्रिप मिले। जानि बतूल तूल तहं ॥
बर संजोगि प्रनाइ। राज बंध्यौ चहुंआनं ॥
बंधि बीर प्रथिराज। जग्य मंडी परवानं ॥
सज्जै जु काइ भंजै कवन। का जानै किम होइ फिरि ॥
पुचीय स्वयंबर मंडिकै। फिरि बंधौं दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥
दूहा ॥ रह सुमंत न्रप चिंति मन। वजी अंतीजन साज ॥
सुनि संजोगि कुमारि ने। ब्रत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना।

कवित्त ॥ जग्य विध्वंसिय पंग। दुअन श्रीतान बढ़ाइय ॥
सुनि सुनि रह संजोगि। चित्त ब्रत लीय प्रवाहिय ॥
बरों कि बर चहुआन। वार षोजं भ्रम्म सारिय ॥
कै झप्पों ट्रंउ प्रान। बरों मनमध्य विचारिय ॥
मन मंझ बत्त इत्ती करी। प्रगट न वल बालह करी ॥
पहुपंग मंत बहु मानि कै। राज राज उच्चित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥
दूहा ॥ पंग सुयंबर थप्पि तहं। सुनिय जुन्होइय बत्त ॥
बर कमोद जिम सुंदरी। रुचि वचननि सुनि गत्ति ॥ छं० ॥ ३६ ॥
मा मुरछी धुक्किय धरनि। सुनिय संजोइय बाल ॥
सुहन सुहंदी बत्तरी। भुअन परही झाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥
अप्प स्वयंबर की जरहि। सथ मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए। रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥
हालाहल की कौज रत। तंतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई। धर जंगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना।

कवित्त ॥ गय जंगल जंगलियं । राज निरवास देस करि ॥
राजा रैनं जुध्ध । गयै प्रथिराज मंत करि ॥
प्रजा पुलिंद नरिंद । समर सावर धर राषी ॥
चीय चीय मावित्त । थान थानं न्रप पाषौ ॥
सम हथ्थ जुध्ध कौ कथ्थ गै । सुबर कथ्थ कविचंद कहि ॥
प्रथिराज राजं अरु वीर गति । विपन मझ्झ आषेट गहि ॥
छं० ॥ ४० ॥

सब सेना का भाग जाना।

काइर मुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
सुक सर तजिहति हंस । दझ्झ बन म्रगन पत्ति भजि ॥
ज्यों कलहीत सु पंषि । तजै तरवर नन सेवं ॥
द्रव्य हीनु कौं गनिक । तजत पथ्थर करि देवं ॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज । जग्य पवित्त न मानइय ॥
भजि थान थान अरि भ्रत गयं । बर लालचि सु प्रानइय ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मानि प्रान की लालसा । तजि साईं सों हेत ॥
छंडि गए कायर सबै । रहै स्रूर बधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुत्र लों । मानिज्जै गुरु जेन ॥
वर संकट सो भृत्त ने । साईं मुक्यो तेन ॥
साईं मुक्यो तेन । सिंघ नन होइ न भिल्लं ॥
सौ समंत छह स्रूर । समं प्रथिराज इकल्लं ॥
धर धूंसे वर पंग । कोस पंची माल्हिज्जै ॥
मिल्यौ जग्य कमधज्ज । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्षनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुग्गिनि पुरैं । गय कन्नवज फिरि दिष्षि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहें पंग सों सिष्य ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानी घत्त । बैर कढ्ढै चहुआनं ॥
मझि प्रात अरु संझ । भयति कंपै [1]पंगानं ॥
पंच अग्ग पंचास । सोर ढिल्लिय रचि गड्ढे ॥
यों कहंत दुत बीय । आय बन बीर सु ठड्ढे ॥
दुसमन दुरंग दैवान गति । अब कुरंग जम्मी ततरि ॥
गज फुंक जेम पूजौ जुझ्झम । चढ़ि अरि संमुह न्रप्प भिरि ॥ छं० ॥ ३ ॥
सिंघ वचन [2]चर मानि । पान असि लष्य सु फेरं ॥
सुबर तप्प चहुआनं । कोइ संमुंह नंन हेरं ॥
भेद न्रपति करिपानं । कन्ह लिन्नौ उर भानं ॥
मिलि ततार कमधज्जं । तारि कढ्ढै चहुआनं ॥
बर हंस छिपंत एकत्त मिलि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलही वज्ज कर वज्र बंद्र । सठ्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गंगानं । (२) ए. वैर ।

* मो-प्रति का पाठ यहां से पुनः आरम्भ होता है ।

सिलह अगें करि लीन । गाम मझ्झें उत्तारिय ॥
सोदागिर ईसब्ब । १वीरं बढ्ढिउ जस भारिय ॥
अंधारी नव भार । अप्प दूनौ संपत्ते ॥
अठ्ठ पारि बर चढ्यौ । २भेस जू जू बर मत्ते ॥
संजुरन बेन कारन्न सब । भाग चवथ्थै चढ्ढयौ ॥
बाजीद षान लूंषे मनों । चूक ३चौंक बर बढ्ढयौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिडार देना।

पार पार बाजीद । धाइ अप्पौ भर कोई ॥
चूक चूक चिंतयौ । सब्ब सामंत जगोई ॥
चूक बीर मानि कै । बीर ४कैमास जु आइय ॥
सूर सूर आहुट्टि । ५सब्ब हंसीरहं धाइय ॥
बर दीन एक अदीन जुध । जिसि समूह कलहंत बजि ॥
बर जम्म दठ्ठ बढ्ढह परे । ६जहां तहां हिंदू सु भजि ॥ छं० ॥ ६ ॥
फिर कहंत बन बीर । चरित ढिल्ली चहुआनं ॥
अप्पन न्रप आषेट । सूर सन्हौ सुलतानं ॥
बर दाहिम कैमास । सिंघ चौकी बर घल्ली ॥
आय अब्ब सामंत । बंध प्रथिराज दु चल्ली ॥
बर साम दान अरु भेद दंड । कंद बंक न्रप किज्जियै ॥
सामंत मंत बँधि सु मति गति । सामि सँग्राम न छिज्जियै ॥ छं० ॥ ७ ॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकेदेह पहुपंग । बंधि ७निझ्झर निसंक भरि ॥
दुतिय देह पज्जून । सुरँभ कूरंभदेव बर ॥
त्रतिय देह तूंअर । प्रहार पांवार सलष्षी ॥
चतुर देह दाहिम्म । धरन नरसिंह सु रष्षौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वीर बढ़ी ऊस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेल।
(३) मो.-चूक। (४) मो.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हंसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह तह हिंमन सु भज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

पंचमी देह कै मास मति। बर रघुवंस कनक त्रिय॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लंगुरि सुविय॥ छं०॥ ८॥

जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंवर करने की सलाह करना।

तब सुमंत परधान। पंग सब सेन बुलाइय॥
जु कछु मंत मंतियै। मंत चहुआन सु घाइय॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याल आवै कै नावै॥
जिमहि नाहि दिज्जियै। लाभ [1]सुंदरि अकरावै॥
मोमंत मंत चिंतै न्टपति। बाल स्वयंबर किज्जियै॥
तापच्छ सिंघ एकट्ठई। फिरि दुज्जन भिरि भंजियै॥ छं०॥ ९॥

दूहा॥ इतनी बत जैचंद सों। कही सुमंत प्रधान॥
बत मन्नी जैचंद नें। अंतर मत भए आन॥ छं०॥ १०॥
मानि मंत पहुपंग ने। महल कहल उठि जाइ॥
बर संबर संजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ॥ छं०॥ ११॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना।

चौपाई॥ सुनी जंत बर बैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरंग बुलाई॥
कहि बर बर उतकंठ सु बोला। चिंते पुच्छि [2]विविरि बर माला॥ छं०॥ १२॥
सहचरि चरित [3]वरनैं मोकल्ली। मनों हरि कामन हरी इकल्ली॥ छं०॥ १३॥
संति करन चित हरन। संतिका नाक तिहि।
*बर सुमंतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि॥ छं०॥ १४॥

दूहा॥ सुथ्थ सु राजन सुथ्थ चित। सुथ्थ विलंब न धीर॥
पुरुष जु क्रम क्रम संचरै। नेन सुता पन पीर॥ छं०॥ १५॥

(१) ए. कृ. को-सुन्दर। (२) ए. कृ. को-विवर। (३) ए. कृ. को-चरन।
* मालूम होता है कि ऊपर की चौपाई के दो अन्तिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ। सहचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ। संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन।

नाराच ॥ परट्ठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुक्कने।
तिसाम दाम दंड भेद सारसी विचष्यने ॥
बच्चन्न चित्त चातुरी न लाहि कोइ पुज्जई।
हरंत मान मेनका मनोहरन सुझ्झई। छं० ॥ १६ ॥
श्रवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई।
अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई।
छिनेक में प्रसन्नवे जु जैम मंस डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्ककलं अलाप जाप ताप ध्वंत्त संसई ॥
त्रिषंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब मुच्छि काम जग्गवै।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही।
विषंम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हट्ठ सों छंडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै सुभ्झवै।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न सुभ्झवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारी। चंचल नैंनीय चंचला वेनी ॥
थावर चित संजोई। थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से बचन।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रष्पि क्रिय।
किम बुद्धिय म्हो तात सकिल्लिय एक हिय ॥

(१) ए. कृ. को.-संजोगि। (२) मो.-परत्ति।

तब बाले बर तात सयंबर मंडइय।
कहि बर उतकंठाइ माल उर छंडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥

चौपाई ॥ मिलि मंडल राजान्न सु बरई। सो उच्छव बंधे संकरई ॥
देषि वाम भोली तजि अंगं। ते ऊभे दरबारह पंगं ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की बातों पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै बर सेन सँजोग। सषि सहचरि सम बुल्लिय ॥
अबुझ घात वज्रपात। काम वेमो दुष भुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै किति। ताहि गंगा गुन गावै ॥
बंझि पूत रस पढ़त। अंन हीनह समझावै ॥
सहचरिय बतनि सुनिय सुदर। चित चल्ल चित दत्त न बकिय ॥
बर भई समझि संजोगि पैं। फिरि उत्तर तिन तब्बे दिय ॥छं०॥२४॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे बंधैं पित संकरह। जे पड्डे प्रित लोन ॥
ते बट्ठी जन बापुरे। बरै सँजोगी कोन ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सैह सहचरिय गुन। का जानौ कुल बत्त ॥
जे मो पित वापह कहै। तेमो बंधव अत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुचौ सुनि गुन इसौ। तात बचनै तजि काज ॥
कै वहि गंगहि संचरौं। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हियै मन्नि अनराव ॥
हौं बरि अवरन्हिं देउं बर। दैवै अधर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तब पंगुरि मन पंगु करि। धाइ सबुझ्झी बत्त ॥
तुम पुचौ गुन जानि हौ। करहु दूरि हठ इत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का बचन।

चंद्रायना ॥ मो मन मंझ गुरू जनं गुझ्झ सु तुम कहौं।
जंपत लाजौं जीह सु उत्तर लहु लहौं ॥

(१) मो.-मुझ्झवै। (२) ए. कृ. कों.-परम। (३) मो.-काहु।

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोह्यि हंति अषंडलिय ॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन।

दूहा ॥ अन दिषि हत लीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्त ॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्त ॥ छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ बचन समुहं संजोगि। बाल उत्तर उच्चारिय ॥
अजहं कनक समूह। तुच्छ जानै नर नारिय ॥
मलया [3]पाम पुलिंद। करै इंधन बर चंदन ॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन ॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय ॥
संयोगि क्रम्म बर पुब्ब गति। तैंन अली अलि व्रत्त लिय ॥छं० ॥३२॥

सहचरी का बचन।

सहचरी वाक्य ॥ गाथा ॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि ॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन ;
संजोगिता का वाक्य।

कवित्त ॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ ॥
जिहि लुहार सांडसी। भीम चालुक अहि साहिय ॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय ॥
पावक सबर बरं नैरि सह। अरनिं मंडि जिहिं बारयौ ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ ॥ छं०॥३४॥

दूहा ॥ अथवा राजन रांज ग्रह। अथवां मांय लुहानि ॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंध्रव जानि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२.) ए. कृ. को.-मन्न।
(३) ए. पर मूर कृ. को.-पमेर।

साटक ॥ आरन्नी अजमेर धुम्मि धमनी, क्रूर मंडि मंडौवरं ॥
मोरीरा मर सुंड दंड दमनो, अग्निं उचिष्टा करी ॥
रनथंभं थिर थंभ सीस अहिनं, ज्वलदिष्ट कारुंजरं ॥
क्रंप्पानं चहुआनं जान रहियं, घड़नोपि गोरी घड़ा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुची मरहट्ट थट्ट सबले, नौमंच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निमीबे हथलेव मालव धरा, मेवार मंडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव न्नपतौं, तत्वान्यनं किं वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

श्लोक ॥ नमे राजन संबादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरमेक स्वयं देहे । नान्यथा प्रथिराजयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन संभारिय ॥
रसन वचन चाहंत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाष गंध्रब्ब । भयौ किल किंचित नारिय ॥
नयन उमड़ि जल बिंद । बदन अंब्रह परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचंद कहि । बाल जदिन मुर संभयौ ॥
उफफेन अमौ मभ्भह रह्यौ । ससि कलंक उफफनि गयौ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
द्रिग रत्त करि बाल । भौंह बंकी करि पिष्भिय ॥
सो ओपम बरदाइ । चंद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुबन नरिंद । परसपर लरंत बिआनं ॥
मनु सम रष्पत बाल । दुहुन सों पीम्रत आनं ॥
भोहन्नि तौंर जाने छुरौ । दुहुन बीच अड्डी करी ॥
सो रूप देषि संजोगि कौ । उठि सहचरि संतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वंतह वयंम । बयन गये म्रत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हौं पूछूं तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) मो.-अहितं ।

सखी का बचन।

थिरु बाले वल्लव मिल्लनुं जो जुव्वनु दिन होइ ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं। रति मंझै घट लोइ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

संजोगिता का बचन।

रति आग्रह तिन सों करहु। जो तुम सषी समान ॥
ज्वाब ज्वाब लजा करों। औं तुम तात प्रमान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सखी का बचन।

तोसों मात न तात तन। गात सुरंगरि याह ॥
यों जोवन अथ्थिर रहै। अंब कि अंजुरियाह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

साटक ॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं ॥
जाती फुल्लय [१]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा ॥
झंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया ॥
सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तेवसंते छबी ॥ छं० ॥ ४५ ॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन)।

कुंडलिया ॥ कहि संजोगि सुनि बत्त इह। मरन सरन मुहि एक ॥
किम अनि रावह लभ्भिहै। दुल्लह जनम बिसेष ॥
दुल्लह जनम बिसेष। लज्ज सिंगारंभ थक्की ॥
बाहिथवत चहुआन। आस सासा जिय रुक्की ॥
बर गुरुजन बिसाहनौ। हिंदु हद बद्दह हियौ ॥
सुक जाई सवरीस। उभैं पच्छै श्रुति कहियौ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

साटक ॥ इंद्रो किं अलि अन्यईयं अनयो, चक्री भुजंगा सुरं ॥
चक्की चारु विचार चारु भंवरे, चिचौनि बंका करे ॥
तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे ॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महद्दा वरे ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दूहा ॥ ग्रम्भ आइ पहुपंग कै। बर चहुआन सु लेषि ॥
सुद्धि नहीं फिर बोलु तुहि। रन पत्तह करि देषि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (१) मो.-चम्पकस्य।

स्लोक ॥ संबादैव विनोदैव। दैव दैवान रष्छितं।
अनुप्राने प्रयाने वा। प्रानेस ढिल्लीस्वरं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ देहि सही संजोगि दै। निकटति पंग कुमारि ॥
त्रुगिंनिवै जीवन मरन। लै अलि अब विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना।

सुनत सहचरी पुत्ति वच। बिबसंव पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय। पंग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय। बुद्धि बंध प्रमान ॥
न्टप आगे बद्धिय न कछु। उत्तर दियौ न आनि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

संयोगिता के हठ पर खिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना।

सहचरि पंग नरिंद सजि। कहिय आइ अलि जाइ ॥
बर संजोगि न मानई। चित्त करहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तब झुकि पंग नरिंद ने। तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै बुड्डवि जल मझि परै। कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान संमान करि। दीने दुजवर पंग ॥
घनं अनष चहुआन कैं। रष्षि सुरी तट गंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश।

झुकि तकिए गंगा तटह। रचि पढ़ि उंच अवास ॥
चहति गही चहुआन कौ। मिटै बाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥

भुजंगी ॥ किए गंग तट्टं अवासं संजोगी। रही सातषन्ने रु छंडी सभोगी॥
बसंतारिवीरं दई सत्त दासी। बीयं बंभनी मद्द नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तियं पांन पानी सबं दुद्ध धारै। करै व्रत बाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेषं अलेषं। सोइ सुष्पनं चित्त चौहानं देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

फिरै पंषिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं घट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं ॥
दलं पुब्ब सेतं अवं छन्न राजै । जदं ताव द्वार सिंघारेज साजै ॥
छं० ॥ ५९ ॥

दलं रत्त तायं गुनं होइ जब्बं । तबे नीद आलस्य आवै जु सब्बं ॥
दलं दष्षिनं रूप छब्बी प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं॥
छं० ॥ ६० ॥

दलं ता बनै रत्ति नील बरानं । तहां पत्त उग्गं मनं जंभ रानं ॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै । तहां हास उग्गै विनोदंत साजै ॥
छं० ॥ ६१ ॥

दलं बाय कोनं नभं रंग साज्जी । तहां चिंति चितं उचाटं विचारी॥
दलं उत्तरं पीत छन्नक लुज्जी । तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर छन्नं इसानं जु होई । तहां लज्ज संका सु संगी सजोई ॥
संधी संधि छन्नं मनं मद्द होई । तहां रोग चिंता चिदोषं सलोई ॥
छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं बनाई । तहां मर्द अंसी सुत्रं लोक पाई ॥
कहै बंभनी भोग संजोग सिष्षी । तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्षी॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना ।

चौपाई ॥ तब इक दिन इम बंभनि बोल्लिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोंलिय॥
कै चहुआन ग्रहौं कर झल्लिय । ना तरु व्रत संजोग सु हल्लिय ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राजं बचन इम जंपै । थंर हर धर दिल्लिय पुर कंपै ॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मीनह। पंग भयं दुज्जन भय छीनह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुर प्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय ।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुंढि फौज जैचंद फिरि । बर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर जाहि बर । रहै ठठुक्कि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपंग । फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढौली तें पच कोस । रंक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए न्रप पास । देस दोऊ अरि बस्से ॥
राह रूप प्रथिराज । जग्गि पंगह गहि गच्छे ॥
न्रिम्मान भान कूरंभ भुज । हांसीपुर न्रप रष्षियै ॥
सामंत सबै कैमास बिन । दुज्जन मुष्ष सु दिष्षियै ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हांसी गढ़ की रक्षा के लिये सामंतों को भेजना।

हांसीपुर सामंत । कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यौ भीम पुंडीर । सलष रष्यौ सुत भानं ॥
रष्यौ जैत पँवार । कन्ह रष्यौ रघुबंसी ॥
रष्यौ देवह कन्न । रष्षि उद्दिग कन गंसी ॥
बग्गरी राव रष्यौ न्रपति । गुर चामंड सु रष्षियै ॥
सामंत सूर तेरह चिगढ़ । गोरी मुष दह दिष्षियै ॥ छं० ॥ ३ ॥

हांसीपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आषेटक मंडि कै । ढिल्ली रषि कैमास ॥
पंच पंच सामंत सह । अग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आषेट वर । पहुपंगनौ जु चास ॥
नैर सु रष्षी सेन सह । न्रिप हांसी पुर प्रास ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस । भंजि मैवास सबै बर ॥
गुज्जर गोरी पंग । देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाप ज्यों तूल । भूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती । बीर रस बीर अघाइय ॥
वामंड राव गोरी दिसा । भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत सूर असिवर बलह । हांसीपुर अग्गह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआना समसूर । सबै सामँत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज । समै सामँत पुब धारं ॥
आदर बर चहुआन । हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम राज । राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह । बर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच सूर संग्राम रवि । सो नतु दै देही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच्च पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत । सुनिय बालोच पहारी ॥
हैं मारू पतिसाह । तेन वेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच । भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान । देस अरि मिष्ट सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करों । अरु वेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै । लौ कहै हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम भुमिया भुसवट करहिं । तुम सहाय हम भीर ॥
सब पंधार बलोच मिलि । पनि कहै ग्रह तीरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक्क बरष प्रथिराज बर । रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावद्दिसि धर भुग्गवै । बर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
घर बीतिय भत्तिय छुरी । घर नागौर निधान ॥
जिन भुज्जन ढिल्ली धरा । ते रष्षे परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोंच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ यों चाहैं न्रप स्हर । चंद चाहै चकोर मुष ॥
बूडत नाव सु कीर । हथ्थ बोहिथ्थ बीर रुष ॥
स्हकत नाजह मेघ । प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आहत तत्त अंतरे । बाल संम्रत गुन चाषै ॥
देषियै दुनी चहुआन मुष । लज्ज पत्ति परबत्त सु गुर ॥
मुक्का चलाइ बेगम न्रपति । तत्त कथा आहत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजंगी ॥ सयं सत्त वेगंम दीनी नरिंदं । तिनं लज्ज पानी मुषं मेछ इंदं ॥
महं बढ्ढि डढ्ढी लजं मुष्य राची । दियौ पान निसुरत्ति जा मुक्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मियानेति पत्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिकत्त विराजी सु घट्टी ॥
महं माहु मंती सु सामंत भ्रम्मं । दियं साहि गोरी सकं बीर ब्रम्मं ॥
छं० ॥ १४ ॥
घने हेम छ्नं विभूती निनारी । तिनं देषि हुब्बेर ग्रब्बं प्रहारी ॥
मयं मोह मुक्का तिनी जात मन्नी । वियं ग्रेह भ्रम्मं क्रमं जात छिन्नी ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मयं हत मध्य महा रस पान । उयौ जनु चंद कलानि पिछान ॥
छ्यौ नर वाहन नाग नरिंद्द । सु मोतीयदाम पयं पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥
रहे बर स्हर कलानिधि राज । मनों न्रप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय औसयं स्हर । मनों पवनंसुत पब्बय मूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ बर बीर सु चामँडराइ । मनों सत पुच तिनं छम चाय ॥
रह्यौ बर बीर चंदेलति स्हर । अरी चन वाहन ज्यों नंद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

रह्यौ रजि सारंग सारँग गौर। सु रष्षन कों छिति पच्चन मौर॥
महं गुर जादव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान॥
छं० ॥ १९ ॥

सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरी दल चंपन कौ संसि राह॥
वरं हत दाहिम देव प्रमान। .... पारथ्थ के उनमान॥
छं० ॥ २० ॥

धनी धर धार धराहर फान। सु विक्रम भोज तनें उनमान॥
षिची वट षीचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

बलोच पहार का संक्षिप्त वर्णन।

बली हत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज॥
न्वनाहन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अहत्तय तेक॥
छं० ॥ २२ ॥

संतं बर सामँत मध्य सु टारि। रहे बर आसिय साहन च्यार॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सहूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर॥
छं० ॥ २३ ॥

उभै मुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अष्षि न लिंग्रह चीर॥
तिनें न्टप टारिय तेसम अष्षि। सु रष्षिय राजन आसिय पष्षि॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक॥ राजं जा न्टप राज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्ध नयं जोवनं॥
निर्जैयं च चिकाल्ल वधनं वधं, गोरेनि भा [2]सेसयं॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सर्षं॥ छं० ॥ २५ ॥

बलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त॥ तिन तुरंग गज भंजि। जंग संभरि उद्धारं॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं॥
ते रष्षे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) कृ.-निभा संसय।

विधि विधिना परिमान । देव देवा दिसि भंगे ॥
सुध मध्य विषम धियपत्ति न्रप । परषि रह्यौ ढिल्ली न्रपति ॥
अग्गर, सु सकल सुरतान कौ । दिपंति दीप दिव लोक पति ॥ छं० ॥ २६ ॥

बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाहीं करना ।

मध्य पंथ संभरिय । चलन वेगक अधिकारिय ॥
मिलि बलोच पाहार । राव चामंड सु धारिय ॥
जु कछु भेद संग्रह्यौ । दियौ तिम भेद प्रमानं ॥
विन अग्या सामंत । जग्गि लग्गिय आपानं ॥
बरजए राम रघुवंस गुर । गामी बल लग्गा विहसि ॥
पज्जूनराव पावस पहर । अंभर मोह भूले रहसि ॥ छं० ॥ २७ ॥
दूहा ॥ सो नागौर सु रष्षि न्रप । अप दिल्ली पुर पास ॥
न्रप अग्या बिन सूर भर । करिंग अहत्त सु वास ॥ छं० ॥ २८ ॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ चढ़ि मक्कां बेगम । साहि जननी अधिकारिय ॥
अति सु धम्म मायां न । कंम विग्यान विचारिय ॥
अष्ट लष्य हाहून । पट्ट विय द्रव्य रजंकिय ॥
सो हथ्थी बर बाजि । जाइ पंथह सा यक्किय ॥
संभरि सुकांन चामंड न्रप । लच्छि लोभ मैंल मत्त सुनि ॥
बरजयौ बीर रघुवंस नर । तौ पनि चल्यौ अभ्भ गनि ॥ छं० ॥ २६ ॥

बेगम के पड़ाव का वर्णन ।

साटक ॥ पासं साइर भार मध्य सघनं, पानीय मिष्टिं गुनं ॥
एकं रूपय रेष साहस विधिं, रम्यं हरम्यं तलं ॥

जातिज्जै बन हंस मग्ग चकितौ, नीरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्त अंग समयं, औयं सु वेराम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपत्तौ ॥
साष भ्रम्म सुरतान। भेद करि भेद सु दित्तौ ॥
है आमिष्ट सुवास। तमक्कि सब बीर सु हल्लिय ॥
भर गोरी सुरतान। संग षुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हौं षंधार अगियान बर ॥
सोधीर कोन चहुआन कौ। लोइ लंक लुट्टै सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धार ॥
अद्ध रयनि परि सोइ। जौंर हिंदू भर आर ॥
ग्रहि बेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय षास षजीना ॥
भजि बलोच केइ भुज्झि। सु बर रत्नी वह दीना ॥
बुंबार सद्द दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त इय ॥
दैवत्त गत्त औसी हुइय। लहिय षत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार बर। पाहारिय सौं षेद ॥
बेगम लुट्टि नरिंद भर। लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि तन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बलोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग बंधौ विषम। अद्ध सेन उप्पर परिग ॥
बेगंम लुट्टि बंधिप सयन। लच्छिं असग्गत रुह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अचरज सब सामंत कौं। कहि अब गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान की। अरु भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

बिन पुच्छै बड़ गुज्जरह। चूक कऱ्यौ सामंत॥
तिन सों ए बच्चौ कही। गुन में दोस दियंत॥ छं० ॥ ३६॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामंतों से प्रार्थना करना।

कवित्त॥ भग्गा बर सब सथ्थ। रही बेगम अधिकारिय॥
मृतक अंग संग्रह्यौ। सस्त्र किन् ग्रहि न हंकारिय॥
बार बार दिष्षि समुष। चीर द्रुपदि ज्यों षंचत॥
उहित सह गोव्यंद। इहित षुदाय सु उच्चत॥
अलहि रु राम इकै निजरि। विपष्ष बंध बंधे चलहि॥
साष्टम पंथ जू जू कियौ। मुगति पंथ एकैं पुलहि॥ छं० ॥ ३७॥
मुगति पंथ नह भिन्न। एकु पंथं अधिकारिय॥
एक नरक संग्रहै। एक मुक्तिय सु विचारिय॥
अंत हरुअ ह्वै तिरै। क्रम्म भारो सो बुड्डै॥
हक्क अंस संग्रहै। अहक सा पुरिसह छुट्टै॥
संसार सकल बुड्यौ फिरै। कहै बंध बंध्यो न किहि॥
बुड्डे सु हक्क सारंग सुक। सु बुधि बुद्ध तत्तह लहहि॥ छं० ॥ ३८॥
चौपाई॥ असु सारंग पत्तिय बंधि। उडै सष्प ह्वै राषै संधि॥
यों न विचारि सु चामंड राइ। मेछ क्रम्म लग्गे गुन चाइ॥
छं० ॥ ३९॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना।

कवित्त॥ लूटि सबरं चतुरंग। सहय चामंडराय सधि॥
मुक्कै कै संग्रहै। के विषंडे के विधि विधि॥
कै अद्दत क्रिय लच्छि। केन लच्छीति समप्पिय॥
फिरें सब्ब षुरसान। दिसा गज्जनीं स रष्षिय॥
माविक्त मत्त कीनी नहीं। हैगै विधि लग्गै विषम॥
चामंडराइ दाहरतनौ। मत मंत्री कीनों सुषम॥ छं० ॥ ४१॥

चौपाई ॥ तज्जि गाम लुट्टिग बर संगी । हय मिष्टन सब सस्त्र सुरंगी ॥
हांसियपुर फेरिय सुरथानं । पुक्कारी गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां । जहँ गज्जनी सहाव ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल । विवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना ।

साटक ॥ ऐ गोरी सुरतान साहिब वरं । साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक हतं । मानस्य मई जगं ॥
बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो । धन योपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं । ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं । अग्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्रप म्रत्यक म्रत्य समानं । आन सुनत सेवक्क न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ विप्प सु षंडन वेद बर । नर षंडन निर ग्यान ॥
चिय षंडन इह में सुन्यौ । धिग जोवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना ।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनी । जंपी मात निधान ॥
में ग्रभ्भह भुभयौ धर्यौ । धुंठिन दवौ षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कवित्त ॥ धरत ग्रभ्भ दस मास । उदर भोगवै दुष्ष तन ॥
सीत जाल बर उष्ण । सवर बरिषा सुमर मन ॥
ता जननी दुष देइ । पुत्र ग्रभ्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुच कौं गति । न साहि निहचै विचारिय ॥
साम्रत्य काल बंधेति न्रक । कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु बचन आवै नहीं । दिन विवान देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥
दूहा ॥ जाचंग्या प्रति हीन सौं । करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ । भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना ।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतानं । सुनि साहब सूर सब्बानं ॥
जा जीवत धरवानं । भुग्गै को तास अप्रमानं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
अति आतुर अप्पानं । षानन पान षाइयं पानं ॥
हियै धक्कि धक्कि लग्गि कंपानं । दीय षबरि सबै फुरमानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन सूर साहब साहि । धकधकी लग्गि रस बीर छाहि ॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कीन । सीची कि अग्गि घृत होम दीन ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तमतमे तेज वर भर करूर । बद्दरंत फट्टि किरनें कि सूर ॥
विफुरैं हथ्थ रस बीर पग्ग । लंघने सीह हथवार तग्ग ॥
छं० ॥ ५२ ॥
फुरमान फट्टि षुरसान षान । बज्जे व सोर सुरवर निसान ॥
रत्तरे रषत उठ्ठे प्रमान । भद्दव कि मेघ घन रंग आन ॥
छं० ॥ ५३ ॥
तत्तारषानि सुविहानं मीर । इहि रत्ति मंड बैरंम तीर ॥
मंची जु मंच जेमंत रूप । बोलियै सहौ सुविहान भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥
दरबार भीर गजबाज लोइ । पावै न मग्ग भर सुभर कोइ ॥
षोलियहि षग्ग हसगंध पलानं । किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान ॥
छं० ॥ ५५ ॥
बंधौं समेत सामंत सूर । सुविहान साहि बोल्यौ करूर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तैयारी का हुकम देना ।

कवित्त ॥ हिरनंकुस पाताल । जाय षग जग मंडाइय ॥
सौवनपुर सुर लुट्टि । पकरि त्रिय काया धाइय ॥